जनसंचार का सशक्त माध्यम 'हिंदी' सिनेमा

डॉ. शिवाजी सांगोळे
सहयोगी प्राध्यापक
हिंदी विभाग प्रमुख
मोरश्वर महाविद्यालय भोकरदन जि. जालना

मनोरंजन, लोक जागृति के साथ जीवन के प्रत्येक भाग को अभिव्यक्त करनेवाला सिनेमा वर्तमान युग का एक सशक्त माध्यम है। सन 1912 में दादासाहब फालके न भारत में प्रथम बार 'राजा हरिचन्द्र' सिनेमा की निर्मिती की और वे इसके अध्येयता बने। उस समय पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, सुधार, स्वातंत्रता, आंदोलन, देश विभाजन पर आधारित फिल्में बनती थी। आज पुरी तरह परिस्थिती बदल गई है उसके अनरूप महंगाई, भ्रष्टाचार, बेकरी, कालाबाजार, रिश्वतखोरी, महिलाओं पर होने वाले अत्याचार जैसे विषयों पर फिल्में बन रही है। फिल्म दृश्य-श्रव्य माध्यम और जनसंचार का प्रभावी माध्यम है। फिल्म के माध्यमसे लोगों का मनोरंजन और संदेश को अच्छि तरह पहुँच सकता है। फिल्म की कथा दृश्य को स्पर्श करती है। इसमें कलात्मक रूप से सृजनात्मक लेखन की योग्यता सबसे अधिक सहायक होती है। इस क्षेत्र में रोजगार की संधियाँ है जैसे पटकथा लेखक, फिल्म निदेशक, अभिनेता,अभिनेत्री, श्रृव्य निदेशक,गीतकार आदि, इसके लिए जनसंचार में डिग्री, अभिनय शिक्षा , हिंदी में अकदमिक योग्यता और ईश्वर प्रदत्त शक्ति होना आवश्यक है। "दुनिया में भारत का बॉलिवुड मुंबई फिल्म उद्योग में प्रथम स्थान रखता है। मुंबई के अतिरिक्त चैन्नई में भी फिल्मों का निर्माण होता है।" (१) फिल्म निर्माण एक सांसारिक उत्पाद होते हुए भी बडा उद्योग है। इसका प्रमुख उद्देश्य पैसा कमाना है तो रोजगार का भी है। फिल्मोंमे समाज एंव देश का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया जाता है। फिल्मों का प्रयोजन केवल मनोरंजन ही नहीं देशहित एवं समाज सुधार भी होता है। कुछ वर्ष से हिंदी फिल्मों की भाषा को लेकर नाक-भौ सिकुडने का सिलसिला भी चल रहा है, लकिन बाजार को इसकी परवाह नहीं होती थी। "हर तरह भाषा की प्रयुक्ति को मानक साहित्यिक भाषा के मानों से तौलने की अतिवादी प्रवृत्ति समीचीन नहीं होती। माध्यम विधाओं और उनकी भाषा की प्रकृति को देखकर उसके विकास में योगदान देना हमारा दायित्व है।" (२) फिल्मों व्दारा हिंदी की लोक प्रियता सातवें आसमान में पहुँची है। फिल्मों के विदेशो के राईट्स भारत के राईट्स से ज्यादा राशि प्राप्त कर रहे है। सिनेमा का कथानक सिर्फ प्यार ही नहीं रहा बल्कि देश भक्तिपर अनेक फिल्में बनी। जिसमें माँ तुझे सलाम, द लीजेंड ऑफ भगतसिंह, मंगल पांडे, आनंद मठ, रंग दे बसंती, तिरंगा जैसी फिल्मों को लोगों ने दिलो जान से चाहा। हिंदी फिल्में प्रसिध्दि की कगार पर खडी थी। हिंदी सिनेमा से सिर्फ हिंदी भाषी लोग ही प्रभावित नहीं हुए बल्कि अहिंदी भाषा लोगों के दिलों पर हिंदी सिनेमा आज भी राज कर रहा है। बच्चों बच्च्यो के जुबान पर हिंदी सिनेमा के सवांदो ने अपना प्रीभाव रखा है। इस तरह सिनेमा के प्रचार और प्रसार में सहायक रहा है। सिनेमा के पात्रों के अनुसार भाषा में दृष्टिगत होता है जैसे - मुन्नाभाई एम.बी.बी.एस. ने टपोरी भाषा को देखते है। समय के साथ सिनेमा और भाषा में परिवर्तन आता रहा है। यह परिवर्तण समाज ने स्वीकृत किया है। जिसके चलते आज भी हिंदी सिनेमा की माँग और प्रभाव बढ रहा है।

भारतीय फिल्मों का हिंदी भाषा को अपनाने का कारण यह था कि हिंदी जन-जन की भाषा है। वह जनभाषा होने के कारण सारे भारत में बोली समझी जाती है। हिंदी भाषाने हिंदी सिनेमा को भारत के कोने-कोने में पहुँचाया। उसी प्रकार फिल्मों ने भी हिंदी को जन-जन तक पहुँचाया एस,तडवी इस संदर्भ में लिखते है -" फिल्मों में हिंदी को चुनना इस बात का प्रमाण है कि हिंदी सभी भारतीय भाषाओं में अधिक उर्जावान, सरल, सुबोध,सुगम तथा आम जनता से शीघ्र जुडने वाली भाषा है।" (३) हिंदी का प्रचार -प्रसार में फिल्मों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फिल्मों ने हिंदी को जनता की जबान पर स्थापित करने का, उनके दिल को जीत ने का महत्वपूर्ण काम किया ळें

आजादी मिलने पर हिंदी के विकास की कमान संभाली हिंदी सिनेमा ने देशभक्ति सामाजिक परिवेश, धार्मिक भावनाओं

और पारिवारिक समस्याओं से ओतप्रोत हिंदी में बनी फिल्मों ने सारे समाज पर आसर डाला। इन हिंदी सिनेमा ने हिंदी पसंद करने वाले दर्शक वर्ण की संख्या में वृध्दि की। हिंदी भाषा में लिखे मधुर गीत सारे देश भर में छाये रहें। सिनेमा की लोकप्रियता के कारण उसने इस भाषा को पूरे देश की संपर्क भाषा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हम यह कह सकते है कि औद्योगिक विकास ने हमें एक उभरता हुआ नया मध्यवर्ग दिया है। जो अपनी मनोरंजन की तलाश में लगा है। ऐसे में सिनेमा ने अलग-अलग प्रयोग किए है। भाषा के नये आयामों से परिचित करवाया है। कमलेश्वरजी का कहना है कि "हम एक जीवंत और विकसित होती भाषा के वारिस है। मैने फिल्मों से लौटने का रास्ता नहीं खोला बल्कि फिल्मों में जाने और टिकने का रास्ता बनाने की कोशिष की, अपनी भाषा के गौरव के साथ"(४) कमलेश्वर कला फिल्म की कहानियों का काफी बडा हिस्सा रह चुका है।

सिनेमा की भाषा साहित्य की भाषा से अलग होती है। सिनेमा की भाषा वह है जिसे निर्देशक कैमरे की आँखों से अभिव्यक्त करता है। कैमरे का एंगल, गति मुवमेंट्स अभिनय, रंग, ड्रेस, लोकेशन सिनेमा की भाषा के प्रमुख अंग है। संवाद भी इसका हिस्सा होतो है। साहित्य में जो बात पन्ने-पन्ने रंग कर कही जाती है। सिनेमा वह बात कुछ दृश्योंके माध्यमसे चुटकियों में कह जाता है। हिंदी सिनेमा देश-दुनिया का सशक्त लोकप्रिय जनसंचार का माध्यम हे। विश्व के हर देश राज्य में सिनेमा का बोल बोला रहा है। अनेक भाषाओं में सिनेमाओं का निर्माण हुआ है। सिनेमा जगत का एक लंबा इतिहास है। ऐरिक जास्टने के अनुसार "सिनेमा वर्तमान समाज में संवहन का सर्वाधक प्रीभावशाली माध्यम है। जैसा की यह शिक्षा और आंतरराष्ट्रीय सद्भावनाओं की बढोतरी का सबलतम साधन है। यदि कहा जाता है कि एक चित्र एक सहस्त्र चित्रों से ज्यादा गुणवान है" (५) विश्व की हर संस्कृती,रहन,सहन,समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों पाखंड, अंधविश्वास, पारिवारिक जीवन, राजनीति, भ्रष्टाचार, दबंगगिरी, अन्याय अत्याचार नानाविध विषय को लेकर फिल्में बनाई जा रही है। हिंदी सिनेमा जगत ने अनके विषय को लेकर अपना अस्तित्व अजमाया है। भारतीय समाज परिवार शहर के घर घर में सिनेमा जगत की काफी चर्चा चलती है। आज सिनेमा के माध्यमसे हिंदी भाषा घर घर पहुँच गई है।

हिंदी सिनेमा के क्षेत्र में सामाजिक मूल्यों, मान्यताओं के प्रखर प्रवक्ता के रूप में व्हि शांताराम, देवकी, बोस, विमलराय मास्टर विनायक, महबूब ख्वाजा, अहमद अब्बास आदि निर्देशक सामने आये। भारतीय समाज में सिनेमा जगत ने एक असीम छाप छोड दी है। आज भी अनेक फिल्म के गीत सुप्रसिध्द इतिहास के पन्नों पर हिट हुए है। लता मंगेशकर व्दारा गाया हुआ हिंदी फिल्म का गीत 'ये मेरे वतन के लोगों' व्दारा भारतीय नौजवान सैनिकों के कार्यो का परिचय करवा देता है। ऐसे एक नहीं अनेक सिनेमा फिल्मों के गीतों के माध्यमसे पाठशाला, उत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, विश्वविद्यालयों के जरिए समाज परिवर्तन के लिए हिंदी सिनेमाओं का सहारा लिया जाता है। आज फिल्म मीडिया एक सशक्त माध्यम बन चुका है। " सिनेमा तकनीक का श्रेय थॉमस अल्वा एडीसन को जाता है।" (६) जॉर्ज इस्ट मैन ने सैल्यूलाईट फिल्म का अविष्कार किया। हिंदी भाषी क्षेत्र हो या अहिंदी भाषी हर कोने में हिंदी सिनेमा पहुँच चुका है। हिंदी भाषा में समाज के हर वर्ग के हिसाब से देश, कला, वातावरण की हिसाब से हर किस्म की फिल्में रिलीज हुई है। सिनेमा का अविष्कार 28 दिसम्बर 1885 को ल्युमियर बन्धुओं व्दारा किया गया। जिसे आधुनिक फिल्म जगत का पितामह कहा जाता है। सुचना प्राद्यौगिकी क्रांति ने तो सिनंमा जगत में नई तकनीकी का सहारा लिमा जा रहा है।

सिनेमा जनसंचार माध्यम का सबसे सषक्त माध्यम है। संचार माध्यम की पहली शर्त यह होती है कि वह ऐसी भाषा को अपनाएँ जिसे अधिक से अधिक लोग जानते, समझते और बोलते है। ऐसी एक मात्र भाषा हिंदी थी। इस कारण फिल्मी उद्योग ने हिंदी को अपना लिया। हिंदी फिल्मों के कारण ही तो हिंदी कश्मीर से कन्याकुमारी तक अभिव्यक्ति का माध्यम बनी। संवाद की भाषा बनी। भूमंडलीक रण के युग में हर वस्तु का मूल्यांकन उनकी उपयोगिता पर होता है। जिस भाषा की उपयोगिता अधिक होती है,। वह भाषा अधिक समय तक टिकती है। विकसित होती है। हिंदी भाषा की उपयोगिता और व्यापकता के कारण ही विश्व की हर भाषा में बनायी गयी फिल्म को फिल्मकार हिंदी में डब करना चाहते है। दक्षिण की अनेक फिल्में हिंदी में डब हुई है। अनेक विदेशी फिल्में भी हिंदी अनुदित हुई है और हो रही है। हिंदी फिल्मों के कारण ही तो भाषा को भी नये अयाम मिले है। हिंदी भाषा देश के कोने-कोने में और विदेशो में पहुँच गयी है। इस सन्दर्भ में अर्चना गौतम लिखती है - " अखिल भारतीय स्तर पर फिल्मों के माध्यम से अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी का अविराम विकास हुआ और लोकप्रियता थी बढी।" (७) दक्षिण भारत में जीन लोगों ने हिंदी का विरोध किया था वे भी हिंदी फिल्में देखने और हिंदी गानों को समझने के लिए हिंदी भाषा सिख रहे हैं। हिंदी फिल्मों के प्रभाव के देख कर अनेक दक्षिण भारतीय कलाकार भी हिंदी

फिल्मों मे आ गये है जिनमे रजनीकांत, कमल हसन, नागार्जुन, रेखा, जयाप्रदा, श्रीदेवी, कैटरिना कैफ, मिनाक्षी शेषाद्रि, शंकर महादेवन, उदितनारायण आदि।

हिंदी फिल्मों में समाज का यथार्थ चित्रण करने के साथ साथ काल्पनिकता का भी समावेश किया जाता है। फिल्मों का मुख्य उद्देश्य पाठकों का मनारंजन और कुछ नया अनुभव प्रदान करना होता है। एक अमेरिकन विव्दान के मतानुसार "फिल्म में चाहे कल्पना की उडान भरी जाती हो, पर उस कल्पना में भी एक ऐसी अनोखी सच्चाई होती है, जो छिपी होती है जिसे लेखक अपनी विशिष्ट शैली के माध्यमसे हमारे सामने लाता है" (६) वर्तमान हिंदी फिल्मों में भी बुनियादी बातों के साथ साथ ढेर सारी काल्पनिकता का समावेश कर श्रोंताओं का मनांरजन करने के साथ- साथ उन्हें समाज की वास्तविकता से परिचित करना होता है। फिल्मों की इस काल्पनिकता के कारण लेखक हिंदी भाषा को नये-नये आयाम देकर, आंलकारिक भाषा का प्रयोग कर भाषा को प्रगल्भ बनाता है।

सांराश :

हिंदी फिल्मो ने जनता का केवल मनोरंजन ही नहीं किया बल्कि जनता का प्रबोधन भी किया। जनता को चेताया, सत्य-असत्य का परिचय कराया तथा सत्य के मार्ग पर चलने का संदेश दिया। समाज को सन्देश देने के लिए शोषितो के मन में क्रांति की भावना जगाने के लिए फिल्म एक सशक्त माध्यम था। और है। यह प्रबोधन का सबसे बडा माध्यम है। अनेक फिल्मकारां ने फिल्मों के सहारे अपने विचार, अपनी भावनाएँ, अपनी संदेशनाएँ जन-जनतक पहुँचायी। हिंदी भाषा को जन-जन तक पहुँचने में भी फिल्म उद्योग का बडा हाथ रहा है। आज विश्व में हिंदी दूसरे नंबर की भाषा है। इसका श्रेय हिंदी फिल्मों को ही जाता है। अंततः निश्चित हि हिंदी फिल्में हर युग की बदलती परिस्थितियों के साथ साथ भारतीय समाज के हर रूप और रंग को किसी न किसी रूप में प्रस्तुत करने में सफल हुई है। आज का दौर फिल्मों का ही दौर है। फिल्में ही मुख्य मनोरंजन और ज्ञान-विज्ञान को सम्बध्द करने का कारगर साधन है। फिल्म प्रस्तुतीकरण की शैली में बदलाव अवश्य दिखाई देता है किन्तु इसके केन्द्र में व्यक्ति और समाज के अनास्त संबंध ही रही है। निश्चित रूप से फिल्में समाज को एक नयी सोच दे सकती है।

संदर्भ :-

१) प्रयोजन मूलक हिंदी - डॉ. रमेश 'तरूण - पृ. 202
२) वैविध पत्रिका - अक्टो -डिसें 2018 - पृ. 32
३) साहित्य और सिनेमा - डॉ शहाजहान मणेर पृ. 59
४) सहिल और सिनेमा - डॉ शैलजा भारव्दाज
५) जनसंचार माध्यम एवं पत्रकरिता कल और आज - डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत पृ. 94
६) हिंदी पत्रकरिता और सूचना प्राद्यौगिकी - डॉ. तुकाराम दौड पृ. 26
७) हिंदी फिचर : स्वरूप और विकास सुनिल उहाळे पृ. 53

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com